United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

प्रेमचन्द की कहानियों में मानवीय संवेदना

डॉ. शम्श अख्तर,
प्राध्यापिका, श्रीमतियन.पी.यस.शासकीय,महिला,महा विद्यालय चित्तूर –517001,
आंध्र प्रदेश।
Mobile: 9440332708
e-mail: shamsakthar@gmail.com

जीवन और जगत के प्रत्यक्ष दर्शन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर प्रेमचन्द अपनी कहानियों के लिए आवश्यक धरातल निश्चित कर लेते हैं और उसी पर वे अपनी अनुभूति का सुंदर महल खड़ा करते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों के विशाल कथापटल पर हम जीवन और जगत के विभिन्न स्थिति-चित्रों को देख सकते हैं। इस वशाल कथापटल (Canvas) पर कहीं, दुःखी चमार "ब्राह्मण देवता" की लकड़ी चीरते-चीरते दम तोड़ रहा है, कहीं हल्कू पूस की भयंकर सर्दी से जूझ रहा है, कहीं घीसू, और माधव कफन के पैसे से शराब का मजा उड़ा रहे हैं, कही शंकर विप्र के ऋण-भार से दबा जा रहा है, कहीं ऋण के दलदल में फँसा रहमान मुक्ति की आशा से छटपटा रहा है, आर्थिक संबंधों से संत्रस्त फूलमती गंगा की बाढ़ में डूबी जा रही है, कहीं किसान की हरी-भरी फसल आग की लपेट में झुलसती जा रही है, कहीं किसान के दीन परिवार पीठ पर गठरी बाँध गाँव छोड़ दिशाहीन चले जा रहे हैं, कहीं डिक्री हो रही है तो कहीं नालिश की जा रही है। प्रेमचन्द एक कुशल आर्किटेक्ट की तरह जीवन की इन अनगढ़ प्रसंग-स्थितियों को काट-छाँटकर कहानी के रूप में ढालते जाते हैं। एक-एक कहानी में जीवन की एक-एक स्थिति सहज रूप में ढलती गयी है। सोषण के दलदल में फंसे किसान की छटपटाहट, धार्मिक अत्याचारों से दीन-हीन को प्राप्त संत्रास, सामाजिक संस्कारों के खोखलेपन की विषम पिरणतियाँ, रिढ़ियों एवं अंधविश्वासों से उपेक्षित विधवा की स्थिति, अनमेल विवाह की परिणति, नैतिक और मानवीय मूल्यों के विघटन से उत्पन्न विषमता आदि अनेक ऐसी ही स्थितियाँ हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ इस अर्थ में सामाजिक आर्थिक, धार्मिक और नैतिक विसंगतियों की विषम परिणतियों को प्रस्तुत करती हैं और संवेदना के धीरे-गंभीर स्वर में समझाती हैं व समसमाज के स्थापन और इस प्रकार मानवीय नैतिकता था मानवचेतना के स्वस्थ विकास के लिए इन सब का विद्रोहात्मक प्रतिनिधि आवश्यक है। यह इन कहानियों की संवेदनात्मक अन्विति भी है। समाज में व्याप्त कुरितयों को प्रगतिशील तथा यथार्थवादी दृष्टि से देखते हुए उनकी विषम परिणतियों से त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के कारण ही यह संवेदनात्मक अन्विति संभव बन पड़ी है।

प्रेमचन्द जीवन की हर स्थिति को मानवता तथा नैतिकता की दृष्टि से देखते और प्रस्तुत करते हैं। चूंकि उनकी प्रेरणा प्रगतिशील रही है और समाजहित एवं समाजोत्थान की भावनाओं से वे प्रेरित रहे हैं, इसिलए उनकी कहानियाँ, प्रायः देहाती घर-पिरवार तक सीमित होते हुए भी, संवेदना के धरातल पर विराठ भावात्मकता और विश्वजनीनता को लेकर – दिखाई पड़ती हैं। प्रेमचन्द को कहानियों में निहित संवेदना को पकड़ने के लिए, हमें इसलिए उनके ग्रामीण जीवन के अनुभवों और निरीक्षणों को जरूर ही आधार बना लेना पड़ता है।

प्रेमचन्द किसी वर्ग, जाति, धर्म या सिद्धांत के प्रति उदार या कटु नहीं है। वे सच्चे मानवतावादी हैं। उनकी कहानियों का मूल आधार वर्गविशेष या जाति विशेष के जीवन की प्रक्रिया नहीं है। उनकी कहानियाँ

मानवीयता और नैतिकता की धुरी पर स्थित है। अच्छाई का दृढ समर्थन और बुराई का कटु विरोध उनका दृष्टिकोण रहा है। इसी स्वस्थ दृष्टिकोण के कारण उनकी कहानियों का कथ्य अधिक संवेद्य बन पड़ा है। इसलिए "मुक्तिधन" का दाऊदयाल एक सामान्य मुसलमान रहमान का सात सौ का कर्ज रद्ध कर देता है और कहता है - "तुम बहुत पहले मुक्ति – धन अदा कर चुके।" यहाँ संवेदना का मूल आधार जाति या धर्म नहीं है, बल्कि घोर दरिद्रता के बावजूद, रहमान का गाय को कसाइयों के हाथों न बेचना है जो मानवीय सहृदयता का परिचायक है। हम सोचने लगते हैं – काश मानव इतना उदार होता!! "मंदिर और मसजिद", "क्षमा" आदि अनेक कहानियों में धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय सहृदयता के बल पर संवेदनात्मक कथ्य उभारा गया है।

सामाजिक विसंगतियों, धार्मिक अत्याचारों, आर्थिक सोषण, रूढ़ियों और परंपराओं के खोखलेपन से जीवन में उत्पन्न विषम स्थितियों के रूपायन के द्वारा प्रेमचन्द अपनी कहानियों में संवेदना को उभारने की चेष्टा करते हैं "पूस की रात" में शोषणमूलक जमींदारी व्यवस्था के परिणामस्वरूप उत्पन्न आर्थिक विषमता और दरिद्रता की स्थिति हमारे सामने आती है। इस विषय स्थिति के कारण हल्कू बेहद ईमांदारी और परिश्रम के प्रति अटूट निष्ठा के बावजूद भरपेट खा नहीं पाता है, कम्बल की सुविधा भी उसे नसीब नहीं है तो हमारा दिल दहल उठता है।

"कफन" में घीसू और माधव ग्रामीण संस्कारों के कोखलेपन से टूटे हुए हैं। ये दमघोटू परिस्थिति से जूझने में पराजित व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आते हैं। दरिद्रता और भूख की असह्य स्थिति के कारण, ये इतने हैवान बने हुए हैं कि प्रसव-वेदना से तड़पनेवाली बुधिया की देखभाल की कतई चिंता न कर वे अपनी भूख को सर्वाधिक महत्व देते हुए आलू को जलते हुए ही निगल जाने की होड़ में लग जाते हैं। कफन के पैसे से प्राप्त भोजन पर इस तरह पिल पडते हैं "जैसे जंगल में कोई शेर अपना शिकार उड़ा रहा हो। न जवाबदेही का खौफ़ था, न बदनामी की फिक्र, इन भावनाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था।" उनको किसी की चितां नहीं – न संस्कारों की न प्रतिष्ठा की, न ही नैतिकता की। आर्थिक असमानता से उत्पन्न घोर दरिद्रता और संस्कारों की ठंडी औपचारिकता की यह अनिवार्य मानसिक परिणति है। घीसू और माधव की यह स्थिति हमारी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था पर एक भयंकर विद्रूप है। पतन की पराकाष्टा पर पहुँचे हुए ये पात्र, हमारी घृणा के बजाय, दया और संवेदना के योग्य बन जाते हैं। यह कहानीकार प्रेमचन्द की मानवीय पीड़ा का द्योतक है। "सद्गति" में धर्मभीरू दुःखी चमार, धासीराम के धार्मिक अत्याचारों का मूक सहन करता जाता है। वह लकड़ी चीरते-चीरते दम तोड सकता है। लेकिन घासीराम से पैलाये गये धर्म-भ्रम से उबर नहीं सकता है। घासीराम के घर पर उसका झाड़ू बुहारना, गोबर लीपना, गाय के लिए घास खोद लाना, लकड़ी चीरना, चिलम भरने आग के लिए पूछने पर पंडिताइन के द्वारा उस के सिर पर आग का फैंका जाना, कुछ खाये-पीये बिना दिन भर लकड़ी चीरते-चीरते उसका वहीं दम तोडना जैसी सभी स्थितियाँ हमारे हृदय को एकदम छकझोरती हैं और हम जातिप्रथा की कटुता, छुआछूत की विड़म्बना, बाग्यवादिता की व्यर्थता को समवेत देखते हुए दुःखी चमार के प्रति करुण संवेदना और घासीराम के प्रति घृणा व्यक्त करने लगते हैं।

"बेटोंवाली विधवा" में प्रेमचन्द अर्थ पर निर्भर पारिवारिक संबन्धों की व्यर्थता और मानव को अपने साथी मानवों के प्रति खासकर विधवा के प्रति सहृदय और उदार होने की आवश्यकता को व्यक्त करते हैं। "स्वामिनी", "धिक्कार", "नैराश्यंलीला", "सुभागिनी" आदि कहानियाँ भी इसी दिशा में अग्रसर हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में रूपयित ऐसी ही अनेक प्रसंग-स्थितियाँ अपने समवेत रूप में हमें अत्यधिक उद्वेलनपूर्ण बनाती हैं और अपनी जिम्मेदारियों के बारे में सोचने को बाधअय करती हैं।

सामाजिक विसंगतियों की विषम परिणतियों के किलाफ विद्रोहात्मक प्रतिरोध करना, कहानीकार प्रेमचन्द का मुख्य लक्ष्य रहा है। उपरोक्त विविध स्थितियों के अवलोकन से यह आसशंका होने लगती है कि किस रूप में यह विद्रोहात्मक प्रतिरोध स्पष्ट हो रहा है। इसलिए प्रश्न उठाये जाते हैं कि कहानीकार दलित और पीड़ित वर्ग को प्रत्यक्ष विद्रोह की ओर क्यों नहीं ले जा रहा है? निराशामय स्थिति में भी, यह पीड़ित वर्ग आशापूर्ण जीवन, कैसे ढो पा रहा है? शोषण और प्रताड़न की विषादमय स्थिति में भी, यह वर्ग, खामोस कैसे रह पाया है? ये पात्र इतने डरपोक और कायर क्यों हो गये है? प्रेमचन्द जैसे सूझबूझ के कलाकार ने ऐसे कायर और कमजोर पात्रों का सृजन, किस अर्थ में किया है? किस अर्थ में ये पात्र सार्थक और सजीव हैं? आखिर हमारे संवेदना इन पात्रों के साथ किस अर्थ में जुड़ती है?

प्रेमचन्द की कहानियों में अवतरित दलित और त्पीडित वर्ग के प्रति हम अनायास सहानुभूति व्यक्त करने लगते हैं। परिस्थितियों की मजबूरियों के कारण हो या वैयक्तिक कमजोरियों के कारण हो, ये पात्र अन्याय-अत्याचार शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाते नहीं है कुछ बोलते नहीं हैं। एक सत्याग्रही की तरह परिस्थितियों का सहन करते हैं और खामोश रह जाते हैं इतने मात्र से इनको निरर्थक एवं निर्जीव समझना समीचीन नहीं है। अपने निरीहता में ये पात्र कुछ बोलते देखे जाते हैं, व्यंग्य-विद्रूप से कुछ कहते नजर आते हैं कि देखो! साथी मानव ने हमारे प्रति कितना नृशंश किया है। धर्म तथा नीति की ओट में अपना उल्लू सीधा करते हुए इसने हमारी क्या दुर्गति कर डाली है!! क्या हमें और हमारी स्थिति को देखकर भी तुम खामोस रह जाओगे? साथी मजदूर मानवों को ऐसे उत्पीड़न से बचाने का कोई क्रांतिकारी कदम नहीं उठाओगे? कुछ करना चाहते हो तो बढ़ो, शोषण की सारी प्रक्रियाओं, धार्मिक अन्याय-अत्याचारों, सामाजिक विसंगति-विड़ंबनाओं तथा खोखलेपन संस्कारों को जड़वत उखाड़ फेंको और मानवलीयता एवं नैतिकता के सच्चे पथ पर, धर्म के इन ठेकेदारों तथा उत्पीड़कों को जबरन खींचकर ले चलो। इनकी यह मूक वाणी क्या सक्रिय नहीं है? इनकी यह विषम स्थिति संवेद्य नहीं है? इनकी यह विदीर्ण स्थिति रूढ़ धर्मिक मान्यताओं को जड़मूल से उखाड़ फेंकने को हमें उत्प्रेरित नहीं कर रही है?

प्रेमचन्द की कहानियों में पात्रपरिकल्पना का प्रेरक आधार आत्मपीड़न रहा है। आत्मपीड़न और आत्मबलिदान के बल पर ये पात्र मानवीय संवेदना को उभारते है! शोषक जमींदारों, महाजनों, धर्म के टेकेदारों की विकृतियों का परिष्करण करते हुए, उनमें दबी-पड़ी सद्भावनाओं को जागृत करते हैं। एक क्रांतिकारी साम्यवादी की तरह प्रेमचन्द तोड़-फोड़ या प्रत्यक्ष विद्रोह में विश्वास नहीं करते हैं। क्युंकी इस से दलित और पीड़ित की क्षणिक विजय भले ही हो, अंतिम विजय केवल सम्भावना ही बनकर रह जाती है। इसलिए बहुत ही सूझबूझ और दूरदर्शिता का प्रदर्शन करते हुए अपने पात्रों के आत्मपीड़न के माध्यम से सोषण मूलक आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था को मूलतः बदल डालने के लए वे जनता को समायत्त करते हैं। जनता को समायत्त करने और उसके "भीतर" को जगाने की शक्ति रखने के कारण प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र लघु और सामान्य होते हुए भी महामानव बन जाते है। संवेदना की अन्विति का यह जबरदस्त आधार भी है। संवेदना की इसी अन्विति के माध्यम से प्रेमचन्द प्रभावान्विति और फिर वैचारिक विद्रोह की ओर अग्रसर होते देखे जाते हैं।

प्रेमचन्द की कहानियाँ धरती की उपज हैं, मानव-जीवन और मानव-जगत की उपज हैं। यथार्थ की इसी विशेषता के कारण कहानियों के पात्र भी पाठक के निजत्व की परिधि में आते हैं। इन पात्रोंकी वेदना शोषण और अभावों की चोट से आहत मानवता की वेदना है।

प्रेमचन्द अपनी आवाज को वेदना की पुकार को, कहानी की साज में इस तरह दर्ज करते हैं कि पूरी कहानी संगीतमय हो जाए। अतः इन कहानियों का वही प्रभाव है जो संगीत का होता है। पामर से पामर, गँवार से गँवार भी, प्रेमचन्द की कहानियों को पसंद करता है, करता रहेगा।

प्रेमचन्द की कहानियाँ मानवीय करुण संवेदना के सूत्र में गुंथे हुए रंगीन और सुंदर फूल हैं।

संदर्भ कहानियाँ :-

1. कफन
2. बेटोंवाली विधवा